प्रवासी कामगारों की सम्मान जनक वापसी पर सामुदायिक पहल

जैसा हम सभी जानते हैं कि इस समय पूरा देश करोना महामारी के कारण एक बड़े आपदा के दौर से गुजर रहा है. इस आपदा में चारों तरफ भय का वातावरण बन गया है. लगभग सभी तरह के ब्यवसाय और आजीवका के काम बंद पड़े हैं. इसमें गरीब और हासिये पर रहने वाले तथा दूर दराज़ के गावों से शहरों में आकर असंगठित क्षेत्र में काम करने वाले कामगारों और मजदूरों की स्थिति काफी दयनीय है. जो मजदूर किसी तरह जी तोड़ मेहनत कर के अपना और अपने परिवार का पेट भरते थे उनके सामने भूखमरी की स्थिति आ गयी है. एक तरफ जहाँ रोजगार न होने के कारण बुजुर्गो के देखभाल व बच्चों के भविष्य की चिंता है वहीं दूसरी तरफ मन में बीमारी का डर बैठ गया है.

जब ये सारे प्रवासी अपने जान को जोखिम में डाल कर वापसी की यात्रा में है तो उन्हें कई तरह की अमानवीय प्रतारणा से होकर गुजरना पड़ रहा है. ये इसी उम्मीद से गांव आ रहे है की वहां पहुँच कर अपनों के बीच इज्जत के साथ जी सकेंगे. लेकिन कई जगह अपने गांव पहुंचने के बाद उन्हें दूसरे तरह की प्रतारणा और उपेक्षा का शिकार होना पड़ रहा है. कही लोग गांव में घुसने नहीं दे रहे हैं तो कहीं खुद के घर वाले अपने आप को असहज महसूस कर रहे हैं. इस महामारी के लिए उन्हें जिम्मेदार, दोषी मानकर कलंक के रूप में देखा जा रहा है जिससे उन्हें भेदभाव पूर्ण व्यवहारों का सामना करना पड़ रहा है जो पूरी तरह से अमानवीय और असंवैधानिक है.

जाहिर है कि समाज में इस तरह की उपेक्षा व्यक्ति के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को बुरी तरह प्रभावित करेगा. और इस प्रभाव के असर से परिवार व समुदाय भी अछूता नहीं रह सकता. तात्कालिक परिणाम भले ही केवल वापस लौटे प्रवासी और उसके परिवार पर दिखे किन्तु दीर्घकालिक असर पूरे समुदाय की समरसता को छिन्न भिन्न कर देगा. आज की उपेक्षा भविष्य के लिए बर्तमान समस्या के साथ साथ एक और बड़ी समस्या को जन्म देगी. इस लिए आज हम सभी की जिम्मेदारी बनती है की प्रवासी के सम्मानपूर्वक वापसी से जुडी बाधाओं को समय से पहचान कर समाधान ढूढ़ने का प्रयास करे.

इसी सन्दर्भ में कुछ संस्थाओ ने मिल कर मुद्दे पर समझ बढ़ाने और समाधान ढूढ़ने का प्रयास किया गया. इस प्रक्रिया से निम्न कदम सुझाए गए हैं :

गाँव में समुदाय स्तर पर जागरूकता और संवेदनशीलता बढ़ाना:

- इस समय समुदाय में सौहार्द का माहौल बनाना सबसे बड़ा काम है.
- पंचायत को एक स्वागत समिति का गठन करना चाहिए. यह समिति गाँव लौट कर आये लोगों का स्वागत करे, उनको एहसास दिलाये की गाँव उनके साथ है. उन्हें सही जानकारी प्रदान करे तथा गाँव की विभिन्न योजनाओं से जोड़े.
- समुदाय में युवाओं को संगठित कर के आने वाले लोंगों की मदद में खड़ा करने की ज़रुरत है. युवाओं को सोसल मीडिया के माध्यम से सही जानकारी उपलब्ध करा कर उनका क्षमता वर्धन करना तथा उन्हें

संवेदित करने की ज़रुरत है. युवाओं के माध्यम से गाँव स्तर पर मिलने वाली सरकारी सेवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करने का काम किया जा सकता है,

- गाँव में जागरूकता बढ़ाने की ज़रुरत है ताकि लोंगो के अन्दर डर एवं भ्रान्तियों को दूर किया जा सके.
- करोना के नाम पर किसी भी विशेष जाती या धर्म के लोंगो को जिम्मेदार ठहराना या उन्हें कलंकित करने से रोकने के लिए जागरूकता बढ़ाने व किसी भी तरह के अफवाह पर नज़र रखने की ज़रुरत है.

गाँव/ समुदाय स्तर पर सेवाओं को सुनिश्चित कराना :

- अति तनाव में रहा रहे तथा मानसिक रूप से परेशान प्रवासियों की पहचान कर उन्हें कौन्सिलिंग सेवा उपलब्ध करने की ज़रुरत है
- पंचायत के साथ संवाद करने की ज़रुरत है ताकि वह गाँव में लौट रहे लोगों के हुनर को पहचान कर रोजगार के अवसर तलाशे.
- आज बचाव के लिए भौतिक दूरी बना कर रखने की ज़रुरत है. बाहर से आये लोंगो को शायद परिवार से पृथक एकांतवास में रहने की ज़रुरत पड़े, यह देखना होगा की क्या उनके पास अलग कमरे की व्यवस्था है. यदि नहीं तो पंचायत द्वारा मदद की जासकती है जो पूरी आदर के साथ होना चाहिए. घर से अलग एकांतवास में रह रहे लोंगो को स्वास्थवर्धक और पोषक भोजन की व्यवस्था करने की ज़रुरत होगी.
- गर्भवती महिलाएं और बच्चे भी प्रवास से आ रहे है. उन्हें जांच, स्वास्थ्य सेवाएँ और पोषाहार उपलब्ध कराने की तुरंत ज़रुरत है.

सेवाओं के लिए सरकारी व्यस्था के साथ संवाद:

- गाँव लौट कर आये सभी प्रवासियों की सूचि बनाना तथा उन्हें ब्लाक, श्रम विभाग, व अन्य स्टेक होल्डर जैसे मिडिया, सामाजिक संस्थाएं व अन्य सरकारी विभाग के साथ जोडें ताकि उन सभी ज़रूरतमंद लोंगो को सरकारी सेवाओं का फायदा दिलाया जा सके.
- सरकारी योजनाओं का प्रचार प्रसार कराएं तथा सर्कार के साथ आर्थिक सुरक्षा की मांग रखी जा सकती है.
- मनरेगा जैसे योजनाओं को गाँव में घर के नजदीक लागू कराने तथा भुगतान जितना जल्दी हो सके की मांग पंचायत के माध्यम से हो सकती है. यह भी देखने की ज़रुरत है की मजदूरी योजना में प्रावधान के अनुसार मिले.
- गाँव में लौट कर आये लोंगो का जॉबकार्ड व राशनकार्ड बनवाने तथा सरकारी योजनाओं में नाम जुडवाने का प्रयास करने की ज़रुरत है

उपरोक्त काम के लिए सहायक तैयारी:

- जिले में तथा आसपास काम कर रहे सामाजिक संस्थाओं को आपस में समन्वय बनाने का तरीका खोजना होगा जैसे साझा मंच/ नेटवर्क आदि हो सकता है

- सामाजिक संस्थाओं, सरकार और समुदाय को मिल कर काम करने की ज़रुरत है ताकि लोगों के अधिकारों और सम्मान की रक्षा की जा सके. साथ में मिल कर समाधान ढूढने में मदद किया जा सके

प्रस्तावक एंड निवेदक : सी०एच०एस०जे० दिल्ली, जतन संस्थान -राजस्थान, ग्रामीण पुनर्निर्माण संस्थान-उ०प्र०, तरुण चेतना- उ०प्र, हार्ड-म०प्र०, सहयोगिनी-झारखंड